वर्ष-01, अंक-69
पृष्ठ-8 मूल्य 2 रूपया

आज का विचार
परिश्रम के उपहार से ही मानव का जग में सत्कार होता है।

CITYCHIEFSENDMENEWS@GMAIL.COM

बिहार सिटी चीफ

बिहार ,शनिवार, 14 जून 2025
सम्पूर्ण भारत मे चर्चित हिन्दी अखबार
ई -पेपर

सुल्तानगंज और कहलगांव रेलवे स्टेशनों पर तैयारी के तहत तेजी से चल रहा कार्य

DRM ने किया निरीक्षण

विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला को लेकर पूर्व रेलवे के मालदा डिवीजन ने तैयारी का बिगुल बजा दिया है। आगामी 11 जुलाई से शुरू होने वाले इस धार्मिक आयोजन के दौरान सुल्तानगंज में उमड़ने वाली लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ को ध्यान में रखते हुए रेलवे प्रशासन ने सुल्तानगंज और कहलगांव रेलवे स्टेशनों पर विशेष तैयारी शुरू कर दी है।

डीआरएम मनीष कुमार गुप्ता ने शुक्रवार को दोनों स्टेशनों का दौरा कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

सुल्तानगंज स्टेशन पर विशेष व्यवस्थाओं की योजना

श्रावणी मेला में देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के मद्देनजर सुल्तानगंज रेलवे स्टेशन को पूरी तरह तैयार करने की दिशा में तेजी से कार्य हो रहा है। डीआरएम मनीष कुमार गुप्ता ने अपने अधिकारियों की टीम के साथ सुल्तानगंज स्टेशन का गहन निरीक्षण किया। इस दौरान अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत चल रहे कार्यों की प्रगति की समीक्षा की गई।

निरीक्षण में स्टेशन परिसर की साफ-सफाई, पेयजल आपूर्ति, रोशनी की व्यवस्था, भीड़ नियंत्रण के उपाय, अस्थायी काउंटर की स्थापना और अतिरिक्त कर्मचारियों की तैनाती जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया गया। डीआरएम ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिया कि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो और सभी सुविधाएं समय रहते सुलभ कराई जाएं।

कहलगांव स्टेशन पर धीमी गति से कार्य पर जताई चिंता

सुल्तानगंज के बाद डीआरएम मनीष कुमार गुप्ता ने कहलगांव रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया, जहां अमृत भारत स्टेशन योजना के

तहत विकास कार्य प्रगति पर है। निरीक्षण के दौरान डीआरएम ने यह स्वीकार किया कि कहलगांव स्टेशन पर कार्य की रफ्तार अपेक्षाकृत धीमी है, जिसे शीघ्र गति देने की जरूरत है। उन्होंने एजेंसी और संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया कि आगामी 20 दिनों में स्टेशन का रेनोवेशन कार्य हर हाल में पूरा कर लिया जाए।

डीआरएम ने सरकुलेटिंग एरिया, टिकट काउंटर, एप्रोच पथ, पार्किंग स्थल, फुटपाथ आदि का निरीक्षण किया और इन सभी क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता बताई।

उन्होंने यह भी कहा कि यात्रियों की सुविधा सर्वोच्च प्राथमिकता है और किसी भी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। स्टेशन के फसाड, साइनेज और एसीपी का कार्य लगभग पूरा हो चुका है और पहले फेज का काम भी समाप्त हो गया है।

स्वचालित सीढ़ियों का आश्वासन, नया रूप लेगा स्टेशन

निरीक्षण के दौरान डीआरएम ने यह भी आश्वासन दिया कि कहलगांव स्टेशन पर जल्द ही स्वचालित सीढ़ियों की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाएगी, जिससे यात्रियों को चढ़ने-उतरने में सहूलियत हो सके। उन्होंने बताया कि स्टेशन जल्द ही एक नए रूप में यात्रियों के सामने होगा, जो सुविधाओं और सौंदर्य दोनों के मामले में बेहतर होगा।

पूर्व मंत्री मंगनी लाल मंडल बनेंगे लालू की पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष

इसी साल जदयू छोड़ राजद में आए थे

बिहार चुनाव से पहले राष्ट्रीय जनता दल प्रदेश अध्यक्ष बदल रहा है। राजद सुप्रीमो के करीबी और दिग्गज नेता जगदानंद सिंह की जगह पूर्व मंत्री मंगनी लाल मंडल ले रहे हैं। हालांकि प्रदेश अध्यक्ष की रेस में पूर्व मंत्री आलोक मेहता और रणविजय साहू का भी नाम चल रहा था। लेकिन, वरिष्ठता और अन्य समीकरण को ध्यान में रखते हुए मंगनी लाल मंडल सबसे मजबूत दावेदार बनकर सामने आए हैं। 19 जून को इनके नाम पर आधिकारिक रूप से मुहर भी लग जाएगी।

धानुक समाज से आने वाले मंगनी लाल मंडल लालू प्रसाद और तेजस्वी यादव की पहली पसंद माने जा रहे हैं। मंगनी लाल 2019 में राजद छोड़कर जदयू में चले गए थे। लेकिन, 17 जनवरी 2025 को उन्होंने सीएम नीतीश कुमार की

पार्टी को अलविदा कह दिया और फिर से राजद का दामन थाम लिया। तब तेजस्वी यादव ने सोशल मीडिया पर उन्हें राजद की सदस्यता दिलाने वाली तस्वीर शेयर करते हुए लिखा था कि जदयू के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, प्रदेश के वरीय समाजवादी नेता मंगनी लाल मंडल जी की पुनः घर वापसी पर राजद की सदस्यता दिलाई। उनका तहेदिल से राजद परिवार में स्वागत करते है। मिथिला क्षेत्र से आने वाले मंगनी लाल मंडल सांसद और एमएलसी रह चुके हैं। वह कैबिनेट मंत्री भी बने और 2004 से 2009 तक राज्यसभा सांसद भी रहेग। राजद उन्हें प्रदेश अध्यक्ष बनाकर ईबीसी वर्ग और मिथिला क्षेत्र के वोटरों को साधने की कोशिश में है।

इधर, प्रदेश अध्यक्ष और राष्ट्रीय परिषद के सदस्यों के निर्वाचन के लिए शुक्रवार से नामांकन पत्र दाखिल किए जाएंगे। राजद के राष्ट्रीय सहायक निर्वाचन पदाधिकारी व प्रवक्ता चितरंजन गगन ने बताया कि शनिवार को सभी राज्यों में प्रदेश अध्यक्ष और राष्ट्रीय परिषद सदस्यों के चुनाव के लिए राज्य निर्वाची पदाधिकारी के सामने नामांकन पत्र दाखिल किया जाएगा। रविवार को नामांकन पत्र की जांच होगी। शाम चार बने उम्मीदवारों की अंतिम सूची प्रकाशित होगी। 19 जून को प्रदेश अध्यक्ष और राष्ट्रीय परिषद् के सदस्यों का चुनाव होगा। शाम में परिणाम की घोषणा भी हो जाएगी।

पीएम मोदी 20 जून को रवाना करेंगे नई वंदे भारत ट्रेन

पटना समेत उत्तर बिहार के लोगों को सुविधा

पटना, बिहार को चुनावी साल में नई वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन मिलने जा रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इसी महीने इस सेमी हाई स्पीड ट्रेन को हरी झंडी दिखाएंगे। 16 कोच वाली नई वंदे भारत एक्सप्रेस बिहार की राजधानी पटना से उत्तर प्रदेश के गोरखपुर के बीच चलाई जाएगी। इसका रूट मुजफ्फरपुर, बेतिया के रास्ते होगा। इसका फायदा पटना समेत उत्तर बिहार के विभिन्न जिलों के यात्रियों को मिलेगा। रेलवे ने इस ट्रेन के संचालन की तैयारी शुरू कर दी है। पटना से लेकर गोरखपुर तक तैयारियां की जा रही हैं। 20 जून को पीएम मोदी की सीवान में प्रस्तावित जनसभा से नई वंदे भारत का वर्चुअल शुभारंभ कराने की योजना है।

रिपोर्ट्स के अनुसार पटना से गोरखपुर के बीच वंदे भारत ट्रेन का परिचालन सप्ताह में 6 दिन किया जाएगा। इसका मेंटनेंस गोरखपुर जंक्शन रेलवे स्टेशन पर ही होगा। गोरखपुर से यह ट्रेन सुबह रवाना होकर पटना पहुंचेगी। फिर वापसी में शाम को पटना से रवाना होकर रात में गोरखपुर पहुंच जाएगी। पटना से गोरखपुर की दूरी लगभग 400 किलोमीटर है। वंदे भारत एक्सप्रेस महज 5 घंटे में यह सफर पूरा कर देगी। यात्रियों को इस रूट पर सबसे फास्ट ट्रेन की सुविधा मिलेगी।

पटना-गोरखपुर वंदे भारत ट्रेन का संभावित रूट और टाइम टेबल

पटना से गोरखपुर के बीच प्रस्तावित नई वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन की टाइमिंग और रूट की आधिकारिक जानकारी जल्द ही रेलवे बोर्ड द्वारा जारी की जाएगी। बताया जा रहा है कि इस ट्रेन को पटना से हाजीपुर, मुजफ्फरपुर, बापूधाम मोतिहारी, बेतिया और नरकटियागंज होकर चलाया जाएगा। संभावित टाइमिंग के अनुसार, गोरखपुर से यह ट्रेन सुबह 6 बजे खुलकर सुबह 11 बजे पटना पहुंचेगी। पटना से दोपहर में 3 बजे खुलकर रात 8-9 बजे गोरखपुर पहुंचेगी।

इस ट्रेन के शुरू होने से राजधानी पटना की उत्तर बिहार की कनेक्टिविटी भी बढ़ जाएगी। पिछले महीने पूर्व मध्य रेलवे ने इसका प्रस्तावित रूट तैयार कर पूर्वोत्तर रेलवे को भेजा था। पीएम नरेंद्र मोदी की बिहार में पिछले दिनों हुए कार्यक्रमों में ही इस ट्रेन को हरी झंडी दिखाने की योजना थी, लेकिन रेलवे बोर्ड की मुहर नहीं लग पाने से इसका परिचालन शुरू नहीं हो पाया था। अब 20 जून को प्रधानमंत्री की सीवान रैली से इस ट्रेन को शुरू कराने की कवायद चल रही है।

राज्य निर्वाचन आयोग ने की घोषणा

ग्राम पंचायतों एवं ग्राम कचहरी के लिए होगा उप चुनाव

बिहार ने पंचायत उप निर्वाचन 2025 को सम्पन्न कराने के लिए 09 जून को जारी अधिसूचना के माध्यम से निर्वाचन से संबंधित कार्यक्रम की घोषणा कर दी गई है। इसके अंतर्गत राज्य के 38 जिलों के अंतर्गत ग्राम पंचायतों एवं ग्राम कचहरी के छह पदों के लिए विभिन्न कारणों से रिक्त हुए कुल 2634 पदों पर मतदान होगा।

राज्य निर्वाचन आयोग, बिहार स्वतंत्र, निष्पक्ष, पारदर्शी, उत्तरदायित्वपूर्ण व सहभागिता के साथ शांतिपूर्ण एवं भयमुक्त मतदान सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

09 जुलाई को होंगे मतदान

पंचायत उप निर्वाचन 2025 के लिए कुल 2634 रिक्त पदों में क्रमशः जिला परिषद सदस्य के 8 पद, ग्राम पंचायत मुखिया के 33 पद, ग्राम कचहरी सरपंच के 83 पद, पंचायत समिति सदस्य के 72 पद, ग्राम पंचायत सदस्य के 839 पद और ग्राम कचहरी पंच 1569 पद के लिए 09 जुलाई को मतदान कराये जायेंगे।

ईवीएम और मतपेटिका से होगा मतदान

ग्राम पंचायत के पदों जैसे जिला परिषद सदस्य, पंचायत समिति सदस्य, ग्राम पंचायत मुखिया एवं ग्राम पंचायत सदस्य के रिक्त पदों पर मतदान ई.वी.एम. के माध्यम से तथा ग्राम कचहरी के पदों यथा ग्राम कचहरी सरपंच एवं ग्राम कचहरी पंच के रिक्त पदों पर मतदान मतपत्र एवं मतपेटिका के माध्यम से कराये जायेंगे।

आयोग की वेबसाईट पर निर्वाचन से संबंधित दिशा-निर्देश उपलब्ध

राज्य निर्वाचन आयोग ने पंचायत आम निर्वाचन, 2021 के अवसर पर निर्गत दिशा-निर्देशों और निर्वाचन प्रक्रिया के मानकों के अनुसार ही पंचायत उप निर्वाचन 2025 भी सम्पन्न कराया जायेगा। निर्वाचन संबंधित सभी दिशा निर्देश आयोग के वेबसाईट sec.bihar.gov.in पर देख सकते हैं।

अभ्यर्थी के लिए ऑनलाइन सुविधा

कोई भी अभ्यर्थी आयोग के वेबसाइट पर जाकर अभ्यर्थी से जुड़ी जानकारी प्राप्त कर सकते है।

मतदाता के लिए ऑनलाईन सुविधा

कोई भी मतदाता राज्य निर्वाचन आयोग के वेबसाईट www.sec.bihar.gov.in पर जाकर निर्वाचक सूची में अपना नाम, मतदान केन्द्र का पता, मतदान का कार्यक्रम एवं अपने क्षेत्र के अभ्यर्थियों से संबंधित सभी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा कोई भी व्यक्ति, मतदाता/अभ्यर्थी आयोग में संचालित कॉल सेंटर कोषांग के टोल फ्री नंबर-1800-3457-243 पर कॉल करके निर्वाचन संबंधी सूचना, सुझाव या शिकायत दर्ज कर सकते हैं।

पप्पू यादव ने तेजस्वी को दी नसीहत

हेडमास्टर मत बनिए, कांग्रेस के माई बाप राहुल, प्रिंयका, खरगे

पूर्णिया के निर्दलीय सांसद और कांग्रेस नेता राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव ने इंडिया गठबंधन को-ऑर्डिनेशन कमेटि के चेयरमैन तेजस्वी यादव को बड़ी नसीहत दी है। नाम लिए बगैर उन्होंने कहा है कि हर दल अपना अपना उम्मीदवार तय करने में सक्षम है। आप हेडमास्टर मत बनिए। कांग्रेस में कौन-कौन चुनाव लड़ेगें यह पार्टी के प्रभारी और नेता तय करेंगे। तेजस्वी के सीएम फेस के बाद प्रत्याशी चयन को लेकर भी महागठबंधन की आंतरिक तनातनी बाहर आ रही है। कांग्रेस के प्रभारी कृष्णा अल्लावरू पहले ही कह चुके हैं कि तेजस्वी यादव सिर्फ कमेटि के चेयरमैन हैं। सीएम फेस अभी तय नहीं हुआ है।

बिहार विधानसभा चुनाव के मद्देनजर 12 जून को तेजस्वी यादव के आवास पर पटना में महागठबंधन के घटक दलों की बैठक हुई। निर्णय लिया गया कि अगली बैठक में सभी दल अपने अपने दावे वाले चुनाव क्षेत्र से प्रत्याशियों का ब्योरा देंगे। इस बैठक को लेकर पहले झारखंड मुक्ति मोर्चा ने आपत्ति जताई कि झामुमो को बैठक में नहीं बुलाया गया। अब कांग्रेस लीडर पप्पू यादव ने बखेड़ा खड़ा करने वाला बयान दिया है। उन्होंने तेजस्वी यादव हेडमास्टर नहीं बनने की नसीहत दी है।

पटना में पत्रकारों से बात करते हुए पप्पू यादव ने कहा- इंडिया गठबंधन के घटक दलों को एक सलाह जरूर दूंगा कि आप हेडमास्टर मत बनिए। पार्टी स्वतंत्र है। कांग्रेस के माई बाप राहुल गांधी, प्रियंका गांधी और खरगे हो सकते हैं। विचारधारा हो सकती है कोई और नहीं हो सकता। आप यह तय नहीं कर सकते कि कौन-कौन लोग किस पार्टी से चुनाव लड़ेंगे। आप अपने दल का देखिए। कांग्रेस में कौन लड़ेंगे, यह हमारे प्रभारी और नेता तय करेंगे। बिहार विधानसभा चुनाव को देखते हुए एडीए और इंडिया गठबंधन की गतिविधियां काफी बढ़ गई हैं। बैठकों के साथ नेताओं के दौरे और आरोप प्रत्यारोप भी जोरों पर है। पप्पू यादव के ताजा बयान को एडीए हथियार बना सकती है।

मुजफ्फरपुर में मुठभेड़...

सरकारी पिस्टल छीनकर भाग रहे अपराधी को पुलिस ने मारी गोली

मुजफ्फरपुर, मुजफ्फरपुर में पुलिस और अपराधियों के बीच मुठभेड़ हुई है। बताया जा रहा है कि अपराधी ने पुलिस का हथियार छीनकर भागने की कोशिश कर रहा। इस दौरान उसने फायरिंग भी की। इसके बाद पुलिस ने उसके पैर में गोली मार दी। उसे इलाज के लिए स्यस्ष्ट॥ में भर्ती करवाया गया है। यह मामला जिले के सरैया थाना क्षेत्र का बताया जा रहा है। पूरे मामले में ग्रामीण एसपी विद्या सागर ने बताया कि सरैया थाना क्षेत्र में हालात को नियंत्रित करने के लिए फायरिंग हुई है। मुंगौली गांव निवासी राहुल कुमार उर्फ राइडर कुछ दिन पहले आइसक्रीम वाले पर गोलीबारी के मामले में वांछित था। पुलिस ने उसे गिरफ्तार करने की कोशिश लेकिन वह गोलीबारी करने लगा। इसके बाद पुलिस ने ऐसी कार्रवाई की।

पुलिसकर्मी का पिस्टल छीनकर हुआ फरार

दरअसल, सरैया थाना की पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर मुंगौली

गांव निवासी शातिर अपराधी राहुल उर्फ राइडर को गिरफ्तार किया। उसकी निशानदेही पर एक कट्टा और एक कारतूस बरामद किया गया। उसके बाद, उसकी निशानदेही पर काली स्थान के पास उसके साथी प्रिंस की गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने छापेमारी की। इसी दौरान राइडर ने शौच जाने की बात कही, जिससे पुलिस की गाड़ी रुक गई। तभी राइडर ने एक पुलिसकर्मी का पिस्टल छीनकर भागने का प्रयास किया। भागने के दौरान उसने फायरिंग भी शुरू कर दी। इसके परिणामस्वरूप आत्मरक्षा में पुलिस ने कंट्रोल फायरिंग की, इसमें राइडर के पैर में घुटने के नीचे गोली लगी। वह मौके पर गिर गया और पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए उसे गिरफ्तार कर लिया।

राहुल पर कई मामले दर्ज

बताया जा रहा है कि राहुल पेशेवर अपराधी है और उसके खिलाफ आधा दर्जन से अधिक आपराधिक मामले दर्ज हैं। 18 सितंबर को उसे एक गुप्त सूचना के आधार पर गिरफ्तार किया गया था। शौच जाने के बहाने पुलिस को चकमा देकर वह बाउंड्री कूद कर फरार हो गया था। उसके बाद से पुलिस उसकी गिरफ्तारी के लिए लगातार छापेमारी कर रही थी। इसी बीच, गुप्त सूचना के आधार पर आज उसे फिर से गिरफ्तार किया गया था। कुछ दिन पहले जैतपुर में पिकअप लूटकांड में भी इसकी संलिप्तता रही है। इसके अलावा, सरैया थाना के कांड संख्या 443/24 में भी वह वांछित था। गिरफ्तारी के बाद वह पुलिस को चकमा देकर भाग गया था, लेकिन आज उसकी फिर से गिरफ्तारी हुई। उसकी निशानदेही पर पुलिस छापेमारी करने जा रही थी, जिसमें एक कट्टा और एक कारतूस भी बरामद किया गया है।

सम्पादकीय

यूएस और चीन के बीच दुर्लभ खनिजों की जंग से भारत भी परेशान

ऊर्जा से लेकर विमानन और रक्षा तक कई क्षेत्रों के लिए जरूरी दुर्लभ खनिजों की आपूर्ति श्रृंखला पर चीन के नियंत्रण को लंबे समय से वैश्विक जोखिम के रूप में देखा जा रहा है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा चीनी निर्यात पर प्रतिबंधात्मक उच्च टैरिफ लागू किए जाने के बाद चीन के नेताओं ने भी इस आर्थिक हथियार का इस्तेमाल आरंभ कर दिया है जिसके बारे में लंबे समय से आशंकाएं प्रकट की जा रही थीं। चीन ने निर्यातक के पास समुचित लाइसेंस न होने की स्थिति में 7 दुर्लभ खनिजों का निर्यात प्रतिबंधित कर दिया है। चीन के पास 17 ऐसे खनिजों की सूची है। अधिकांश निर्यातकों ने ध्यान दिया कि फिलहाल वहां प्रभावी लाइसेंसिंग व्यवस्था नहीं है और कम से कम निकट भविष्य में इसका मतलब निर्यात पर प्रतिबंध लगने जैसा ही है।

ऊर्जा से लेकर विमानन और रक्षा तक कई क्षेत्रों के लिए जरूरी दुर्लभ खनिजों की आपूर्ति श्रृंखला पर चीन के नियंत्रण को लंबे समय से वैश्विक जोखिम के रूप में देखा जा रहा है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा चीनी निर्यात पर प्रतिबंधात्मक उच्च टैरिफ लागू किए जाने के बाद चीन के नेताओं ने भी इस आर्थिक हथियार का इस्तेमाल आरंभ कर दिया है जिसके बारे में लंबे समय से आशंकाएं प्रकट की जा रही थीं। चीन ने निर्यातक के पास समुचित लाइसेंस न होने की स्थिति में 7 दुर्लभ खनिजों का निर्यात प्रतिबंधित कर दिया है। चीन के पास 17 ऐसे खनिजों की सूची है। अधिकांश निर्यातकों ने ध्यान दिया कि फिलहाल वहां प्रभावी लाइसेंसिंग व्यवस्था नहीं है और कम से कम निकट भविष्य में इसका मतलब निर्यात पर प्रतिबंध लगने जैसा ही है। दरअसल अमेरिका और चीन के बीच जारी व्यापार युद्ध में कई अन्य देशों के साथ भारत भी पिस रहा है। अप्रैल में चीन ने कुछ भारी एवं मध्यम दुर्लभ खनिजों एवं इनसे जुड़े मैग्नेट के निर्यात पर पाबंदी लगाने की घोषणा की थी और कहा था कि इनके निर्यात के लिए लाइसेंस लेना आवश्यक होगा। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की तरफ से शुल्क एवं विभिन्न व्यापार प्रतिबंध लगाने की घोषणा के बाद चीन ने यह कदम उठाया था। इन तत्त्वों के निर्यात के लिए लाइसेंस लेने में कठिनाई पेश आ रही है और यह साबित करना भी कम पेचीदा नहीं है कि किन उद्देश्यों के लिए इनका इस्तेमाल किया जाएगा। इसकी वजह से भारत में भी विनिर्माण गतिविधियां प्रभावित हो रही हैं। चीन का आधिकारिक रूप से ज्ञात भंडार के 50 फीसदी हिस्से पर नियंत्रण है और निष्कर्षण और प्रसंस्करण क्षमता में इसकी क्रमश: 70 फीसदी और 90 फीसदी हिस्सेदारी है। ये खनिज वाहन, सोलर पैनल आदि के विनिर्माण में काफी महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं।

अब चीन से इन दुर्लभ खनिजों की आपूर्ति बाधित होने से भारतीय उद्योगों को दूसरे विकल्पों पर विचार करना होगा। यह निश्चित था कि चीन कभी न कभी इन तत्त्वों की आपूर्ति रोक कर इनका इस्तेमाल व्यापार में हथियार के रूप में करेगा। वास्तव में चीन अपने इस हथियार का इस्तेमाल पहले भी कर चुका है। जब एक दशक से अधिक समय पूर्व चीन और जापान में तनाव चल रहा था तो उस समय चीन ने जापान और उसकी कंपनियों को इन तत्त्वों की आपूर्ति रोक दी थी। चीन के साथ अपने इस अनुभव से सबक लेते हुए जापान ने अस्थायी बाधाओं का सामना करने के लिए खनिजों का रणनीतिक भंडार तैयार कर लिया है और फिलिपींस और ऑस्ट्रेलिया सहित अन्य देशों के माध्यम से एक वैकल्पिक आपूर्ति व्यवस्था का भी बंदोबस्त कर लिया है। भारत को भी इस तरह की तैयारी करनी चाहिए थी, विशेषकर वर्ष 2000 में गलवान में चीन के साथ सैन्य झड़प के बाद उसे इन खनिजों की उपलब्धता सुनिश्चित करने का प्रयास शुरू कर देना चाहिए था। अब भारत सरकार और कंपनियों ने इस दिशा में प्रयास शुरू कर दिया है और यह दिख भी रहा है लेकिन इसमें तालमेल का अभाव दिख रहा है। सरकार ने काबिल नाम से एक सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी स्थापित की है जिसका उद्देश्य आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए दुर्लभ खनिजों की आपूर्ति व्यवस्था दुरुस्त रखना है। इस बीच, वेदांत जैसी कुछ बड़ी कंपनियों और हैदराबाद स्थित मिडवेस्ट एडवांस्ड मटीरियल्स ने आपूर्ति व्यवस्था में भारी निवेश करना शुरू किया है। हालांकि, इन प्रयासों को वास्तविक रणनीति का दर्जा नहीं दिया सकता। वास्तविक रणनीति आपूर्ति श्रृंखला में निष्कर्षण एवं प्रसंस्करण दोनों का ख्याल रखने और सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों के साथ काम करने के साथ ही जापान जैसे विश्वसनीय देशों को भी अपने साथ जोड़ने की होनी चाहिए। भारत की रणनीतिक सोच के साथ अक्सर सबसे बड़ी समस्या यह रही है कि यह केवल आंतरिक बाजार पर ध्यान देता है। भारतीय कंपनियां भी प्रसंस्करण एवं निष्कर्षण में अग्रणी बन सकती हैं।

प्रसंस्करण कार्यों के विस्तार में भारतीय इंजीनियर मानव पूंजी उपलब्ध करा सकते हैं। किंतु, इसके लिए सरकार से स्पष्ट संकेत एवं तालमेल की जरूरत होगी। इसके लिए विदेश नीति को लेकर भी सटीक व्यावहारिक दृष्टिकोण रखना होगा। उदाहरण के लिए चीन में जितनी मात्रा में खनिजों का निष्कर्षण होता है उसका ज्यादातर हिस्सा उत्तरी म्यांमार से आयात होता है। भारत ने ठीक अपने पड़ोस में इस संभावना को नजरअंदाज किया है मगर चीन ने ऐसा नहीं किया।

दोहरी त्रासदी है अहमदाबाद विमान दुर्घटना

अहमदाबाद की विमान दुर्घटना एक दोहरी त्रासदी है, जिसने न केवल आकाश में, बल्कि धरती पर भी तबाही मचाई। मेघानी नगर जैसे घनी आबादी वाले क्षेत्र में पहली बार हुई इस घटना ने विमानन सुरक्षा, शहरी नियोजन, और आपदा प्रबंधन की कमियों को उजागर किया है। तेजी से बढ़ता विमानन उद्योग और अनियोजित शहरीकरण इस तरह के जोखिमों को और बढ़ा रहे हैं। यह समय है कि हम इस त्रासदी से सबक लें और भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए ठोस कदम उठाएं।

अहमदाबाद के मेघानी नगर के लिए 12 जून 2025 की दोपहर एक काला दिन बन गया, जब एयर इंडिया की फ्लाइट एआई171, एक बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर, टेकऑफ के महज पांच मिनट बाद एक घनी आबादी वाले रिहायशी क्षेत्र में क्रैश हो गई। यह दुर्घटना अपने आप में एक दोहरी त्रासदी थी—विमान में सवार 242 लोगों (230 यात्री और 12 क्रू मेंबर) में से अधिकांश की जान चली गई, और जमीन पर मेघानी नगर के बीजे मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल और स्टाफ क्वार्टर्स में पांच मेडिकल स्टूडेंट्स सहित कई लोग मारे गए। यह अहमदाबाद के इतिहास में पहली बार था जब इतनी घनी आबादी वाले क्षेत्र में विमान दुर्घटना हुई। इस हादसे ने न केवल मानवीय क्षति की भयावहता को उजागर किया, बल्कि तेजी से बढ़ती विमानन सेवाओं और शहरीकरण के बीच सुरक्षा के अनसुलझे सवालों को भी सामने लाया।

इस हादसे की सबसे बड़ी त्रासदी इसकी दोहरी प्रकृति है। पहला, विमान में सवार 242 लोगों में से केवल एक यात्री, विश्वास कुमार रमेश, चमत्कारिक रूप से बच पाया। इसमें गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी जैसे प्रमुख व्यक्तियों की मृत्यु ने इस हादसे को और गंभीर बना दिया।

दूसरा, विमान का मेघानी नगर जैसे घनी आबादी वाले क्षेत्र में गिरना, जहां बीजे मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल और स्टाफ क्वार्टर्स जैसी संवेदनशील संरचनाएं थीं, ने जमीन पर भी भारी तबाही मचाई। पुलिस कमिश्नर जी.एस. मलिक के अनुसार, 204 शव बरामद किए गए, जिनमें विमान के यात्री और जमीन पर मौजूद लोग शामिल थे। पांच मेडिकल स्टूडेंट्स की मौत और कई अन्य के घायल होने ने इस हादसे को और भी दुखद बना दिया।

यह पहली बार था जब अहमदाबाद के इतिहास में इतनी घनी आबादी वाले क्षेत्र में विमान दुर्घटना हुई। इसने न केवल विमानन सुरक्षा पर सवाल उठाए, बल्कि हवाई अड्डों के आसपास बस्तियों के अनियोजित विस्तार को भी एक गंभीर चिंता का विषय बना दिया।

भारत में विमानन उद्योग पिछले कुछ दशकों में अभूतपूर्व गति से बढ़ा है। सरकार की उड़ान योजना और निजी एयरलाइंस के विस्तार ने हवाई यात्रा को आम लोगों की पहुंच में ला दिया है। लेकिन, इस तेजी से बढ़ते उद्योग के साथ दुर्घटनाओं की संभावनाएं भी बढ़ रही हैं। अहमदाबाद हादसा इस बात का ज्वलंत उदाहरण है कि विमानन सुरक्षा के मानकों को और सख्त करने की जरूरत है।

बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर, जो 2014 में एयर इंडिया को डिलीवर हुआ था, इस मॉडल का पहला क्रैश था। प्रारंभिक जांच में तकनीकी खराबी, पायलट त्रुटि, या बाहरी कारकों (जैसे बर्ड स्ट्राइक) की संभावना पर विचार किया जा रहा है। लेकिन यह सवाल अनुत्तरित है कि इतने आधुनिक विमान में ऐसी विफलता कैसे हुई?

विमानन सेवाओं के विस्तार के साथ, हवाई अड्डों की संख्या और उड़ानों की आवृत्ति बढ़ रही है। यह स्वाभाविक रूप से जोखिम को बढ़ाता है, खासकर उन हवाई अड्डों के पास जो घनी आबादी वाले क्षेत्रों से घिरे हैं। मेघानी नगर जैसे क्षेत्रों में हवाई अड्डों की निकटता और अनियोजित शहरीकरण ने इस हादसे के प्रभाव को और बढ़ा दिया।

मेघानी नगर जैसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में विमान दुर्घटना का होना शहरी नियोजन की विफलता को दशार्ता है। सरदार वल्लभभाई पटेल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के आसपास बस्तियों का अनियोजित विस्तार इस हादसे का एक प्रमुख कारण रहा। विश्व स्तर पर, हवाई अड्डों के आसपास बफर जोन बनाए जाते हैं, जहां निर्माण कार्यों पर सख्त नियंत्रण होता है। लेकिन भारत में कई शहरों में, विशेष रूप से अहमदाबाद जैसे तेजी से विकसित हो रहे महानगरों में, यह नियम प्रभावी ढंग से लागू नहीं हो पा रहा है।

यह हादसा इस बात की ओर इशारा करता है कि हमें हवाई अड्डों के आसपास के क्षेत्रों में सुरक्षा मानकों को फिर से परिभाषित करने की जरूरत है। बफर जोन, आपातकालीन निकासी योजनाएं, और स्थानीय समुदायों के लिए जागरूकता कार्यक्रम इस तरह की त्रासदियों को कम करने में मदद कर सकते हैं।

इस हादसे ने मेघानी नगर के स्थानीय समुदाय, खासकर बीजे मेडिकल कॉलेज के स्टूडेंट्स और स्टाफ, पर गहरा मनोवैज्ञानिक प्रभाव डाला है। मेडिकल स्टूडेंट्स, जो भविष्य के डॉक्टर बनने की राह पर थे, इस हादसे का शिकार बने। यह न केवल उनके परिवारों के लिए, बल्कि पूरे समुदाय के लिए एक बड़ा आघात है। स्थानीय निवासियों में अब हवाई अड्डे की निकटता को लेकर डर का माहौल है, जो रियल एस्टेट और स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकता है।

इसके अलावा, हादसे ने हवाई यात्रा की सुरक्षा पर लोगों का भरोसा डगमगा दिया है। एयर इंडिया, जो पहले से ही वित्तीय और प्रबंधकीय चुनौतियों का सामना कर रही थी, को इस हादसे से भारी झटका लगा है। यात्रियों में डर का माहौल बन सकता है, जिसका असर पूरे विमानन उद्योग पर पड़ सकता है।

यह हादसा केवल स्थानीय स्तर पर ही नहीं, बल्कि वैश्विक विमानन उद्योग के लिए भी एक चेतावनी है। बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर एक अत्याधुनिक विमान माना जाता है, और इस मॉडल का पहला क्रैश बोइंग की विश्वसनीयता पर सवाल उठाता है। इससे बोइंग के शेयरों और इस मॉडल की बिक्री पर असर पड़ सकता है।

साथ ही, भारत के विमानन उद्योग की विश्वसनीयता पर भी सवाल उठ रहे हैं, जो विदेशी निवेश और पर्यटन को प्रभावित कर सकता है। मेघानी नगर के स्थानीय व्यापारियों ने बताया कि हादसे के बाद क्षेत्र में लोगों का आना-जाना कम हो गया है, जिससे उनकी आजीविका प्रभावित हुई है। रियल एस्टेट की कीमतों में भी कमी की आशंका है, क्योंकि लोग अब हवाई अड्डे के आसपास के क्षेत्रों में रहने से हिचक सकते हैं।

इस हादसे ने कई महत्वपूर्ण सवाल खड़े किए हैं, जिनका समाधान भविष्य में ऐसी त्रासदियों को रोकने के लिए जरूरी है। विमानन सुरक्षा मानकों का सख्ती से पालन करना होगा, जिसमें विमान रखरखाव, पायलट प्रशिक्षण, और तकनीकी जांच की प्रक्रियाओं को और मजबूत करना शामिल है। ब्लैक बॉक्स और कॉकपिट वॉयस रिकॉर्डर की जांच से हादसे के सटीक कारणों का पता लगाना आवश्यक है।

शहरी नियोजन में सुधार लाना अनिवार्य है। हवाई अड्डों के आसपास बफर जोन बनाकर और अनियोजित निर्माण पर रोक लगाकर मेघानी नगर जैसे क्षेत्रों में सुरक्षा मानकों को लागू करने के लिए सख्त नीतियां बनानी होंगी। घनी आबादी वाले क्षेत्रों में आपदा प्रबंधन के लिए बेहतर प्रशिक्षण और संसाधनों की जरूरत है। एनडीआरएफ और स्थानीय प्रशासन की त्वरित प्रतिक्रिया सराहनीय थी, लेकिन इसे और प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

स्थानीय समुदायों को हवाई अड्डों के जोखिमों और आपातकालीन योजनाओं के बारे में जागरूक करना जरूरी है। यह उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करेगा और संकट की स्थिति में उनकी भागीदारी बढ़ाएगा। पीड़ितों के परिवारों और स्थानीय समुदाय के लिए काउंसलिंग और मनोवैज्ञानिक सहायता प्रदान की जानी चाहिए, ताकि वे इस त्रासदी के आघात से उबर सकें।

अहमदाबाद की यह विमान दुर्घटना एक दोहरी त्रासदी थी, जिसने न केवल आकाश में, बल्कि धरती पर भी तबाही मचाई। मेघानी नगर जैसे घनी आबादी वाले क्षेत्र में पहली बार हुई इस घटना ने विमानन सुरक्षा, शहरी नियोजन, और आपदा प्रबंधन की कमियों को उजागर किया है। तेजी से बढ़ता विमानन उद्योग और अनियोजित शहरीकरण इस तरह के जोखिमों को और बढ़ा रहे हैं।

यह समय है कि हम इस त्रासदी से सबक लें और भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए ठोस कदम उठाएं। मेघानी नगर के निवासियों, पीड़ितों के परिवारों, और पूरे देश की संवेदनाएं इस मुश्किल वक्त में एक साथ हैं। यह हादसा हमें याद दिलाता है कि प्रगति के साथ-साथ सुरक्षा को प्राथमिकता देना कितना जरूरी है।

पॉक्सो पीड़ितों को मुआवजा: न्याय से आगे की महती जिम्मेदारी

पॉक्सो एक्ट में पीड़ित बच्चों की तरफ से केस लड़ने वाले वकील मोईन खान कहते हैं, जिस तरह बच्चों के लिए न्याय आवश्यक है, उसी तरह मुआवजा भी बेहद जरूरी है। मुआवजे की मदद से उनकी बेपटरी जिंदगी वापस पटरी पर आती है।

जब एक बच्चा यौन शोषण और यौन हिंसा की काली सुरंग से गुजरता है, तब वह रोशनी की एक किरण के लिए भी छटपटाता है। यौन शोषण सिर्फ शरीर पर घाव नहीं करता, यह अंतरात्मा को झिंझोड़ कर रख देता है। फिर वह अबोधपन, जब बच्चे जानते ही नहीं कि शारीरिक संबंध या शोषण क्या होता है, तब वे मानसिक रूप से बहुत टूट जाते हैं। यह एक ऐसा घाव है, जिसे नासूर बनने में वक्त नहीं लगता। अदालतें दोषी को सजा देती हैं, कानून अपनी प्रक्रिया पूरी करता है, लेकिन पीड़ित का पुनर्वास उसके नए और बेहतर जीवन की नींव है।यह मुआवजा बच्चे और उसके परिवार के लिए भावनात्मक और व्यवहारिक सहारा बनता है। पॉक्सो एक्ट की धारा 33(8) और आपराधिक प्रक्रिया संहिता की धारा 357ए इस बात को स्पष्ट करती हैं कि पीड़ित को उचित, त्वरित और सम्मानजनक मुआवजा मिलना चाहिए। यह मुआवजा लेकिन दुर्भाग्यवश, हमारे देश-प्रदेश-अंचल

में आज भी ऐसे हजारों मामले हैं, जहां बच्चों को समय पर या पर्याप्त मुआवजा नहीं मिल पाता। यह कोताही सिर्फ एक प्रशासनिक चूक नहीं, बल्कि बच्चों को दूसरी बार न्याय से वंचित करने जैसा है।

%आस% संस्था, जो कि बच्चों के बचपन को सुरक्षित बनाने के लिए काम करती है, की काउंसलर शिवकन्या बघेल बताती हैं कि वे लगातार पीड़ित बच्चियों को मुआवजा दिलवाने के लिए कोर्ट के चक्कर लगाती हैं। कुछ मामलों में तीन लाख तक का मुआवजा भी मिला है, लेकिन अनेक मामले अभी पेंडिंग चल रहे हैं।

जब बच्चों के साथ यौन शोषण की दुर्घटना होती है, तो अधिकांश पालक चुप्पी साध लेते हैं। हम उन्हें समझा-बुझा कर पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज करवाने के लिए तैयार करते हैं। अधिकांशत: ये लोग गरीब तबके से आते हैं। वे सामाजिक डर से स्थानांतरण करते हैं। अधिकांश मामलों में परिजन अपना पुराना मोहल्ला या गांव छोड़ देते हैं। नई जगह पालकों को बसने में कठिनाई आती है, काम-धंधा छूट जाता है, वहीं नाबालिग बच्चे की स्कूल या पढ़ाई भी छूटती है। इन सभी को सुचारू रूप से चलाने के लिए कंपनसेशन बहुत जरूरी है। परंतु अधिकांश मामलों में या तो कंपनसेशन वक्त पर नहीं मिलता या इतना कम होता है कि वह नाबालिग के पुनर्वास के लिए पर्याप्त नहीं होता। हमने देखा है, कई बार विक्टिम कंपनसेशन बोर्ड की बैठकें समय पर नहीं हो पाती हैं। तबादले के कारण जो नए अधिकारी आते हैं, वे केस फिर से पूरा समझते हैं। जिला अधिकारियों को यह स्पष्ट नहीं होता कि मुआवजे की प्रक्रिया किसे शुरू करनी है- पुलिस, अदालत या बाल कल्याण समिति को। इन व्यवस्थागत उलझनों के बीच बच्चा कहीं खो जाता है, जिसे त्वरित सहायता की जरूरत थी। हम लोग चूंकि लंबे समय से इस प्रक्रिया का हिस्सा रहे हैं, इसलिए यह राह हमारे लिए फिर भी थोड़ी आसान है, लेकिन अन्य पालकों को मुसीबत का सामना करना पड़ता है।

पॉक्सो एक्ट में पीड़ित बच्चों की तरफ से केस लड़ने वाले वकील मोईन खान कहते हैं, जिस तरह बच्चों के लिए न्याय आवश्यक है, उसी तरह मुआवजा भी बेहद जरूरी है। मुआवजे की मदद से उनकी बेपटरी जिंदगी वापस पटरी पर आती है।

एक केस के संबंध में चर्चा करते हुए वे बताते हैं, यह एक ग्रामीण केस था। बच्ची के माता-पिता अलग हो गए थे। मां ने दूसरी शादी कर ली थी। बच्ची मां और सौतेले पिता के साथ थी। एक दिन वह अपने जैविक पिता के पास लौट आई। आठवीं कक्षा में पढ़ने वाली इस बच्ची के साथ उसके अपने पिता ने बलात्कार किया, एक नहीं, कई बार। तंग आकर बच्ची ने डायल 100 पर सूचना देकर थाने में रिपोर्ट करवाई। बच्ची को न्याय मिला। उसके हैवान पिता को दस साल की सजा हुई। उसके बाद दूसरी जद्दोजहद शुरू हुई, बच्ची को मुआवजा दिलवाने की। अपने ही घर-परिजनों की सताई बच्ची अब उनके साथ नहीं रहना चाहती थी। हमने कोशिश करके न्यायालय से 1,50,000 का मुआवजा दिलवाया। यह मुआवजा बच्ची के अच्छे भविष्य के लिए बेहद जरूरी है। अब यह बच्ची अपने भाई के साथ वापस स्कूल जाने लगी है और अतीत की कटु यादों से निकलने की हर संभव कोशिश कर रही है।

एक बच्चा जब हिम्मत करके शोषण की बात बताता है, तो वह केवल अपराध की शिकायत ही नहीं करता। कहीं ना कहीं उसे विश्वास होता है कि सिस्टम उसे संभालेगा। अभी उसकी उम्र नहीं कि वह खुद से खुद को संभाल ले। यदि हम उस भरोसे के बदले उसे कागजी वादा, तारीख और इंतज़ार ही दे पाते हैं, तो यह एक अन्याय के बाद दूसरा अन्याय होगा। प्रशासन को यह समझना चाहिए कि मुआवजा केवल राशि नहीं, यह एक मरहम है—और मरहम समय पर दिया जाए, तभी घाव नासूर नहीं बनता, बल्कि भरता है।

सुशांत सिंह की इस फिल्म में विलेन बनने वाला था यह दिग्गज अभिनेता

सुशांत सिंह राजपूत सिनेमाई दुनिया को वो सितारा हैं, जिनकी चमक कभी कम नहीं होगी। अभिनेता की बहुआयामी प्रतिभा और दूरदर्शी सोच उन्हें सबसे अलग करती थी। अभिनेता ने अपने अभिनय करियर की शुरुआत साल 2013 में काई पो छे फिल्म से की थी, इसके बाद उन्होंने कई शानदार फिल्में कीं। सभी फिल्मों से जुड़े कुछ दिलचस्प किस्से भी रहे हैं, जिनसे लोग पूरी तरह अनजान हैं। आज शनिवार के दिन यानी कि 14 जून को सुशांत सिंह राजपूत की पांचवीं पुण्यतिथि मनाई जा रही है। इस खास मौके पर जानेंगे उनकी फिल्मों के जबरदस्त किस्सों के बारे में। आइए ले चलते हैं आपको किस्सों की दुनिया मेंज

निर्देशक- अभिषेक कपूर

'काई पो छे' एक गुजराती मुहावरा है जिसका अर्थ है मैंने पतंग काट दी है। इस मुहावरे को खुशियां मनाने के लिए लोग प्रयोग करते हैं। यह फिल्म चेतन भगत के उपन्यास 'द थ्री मिस्टेक्स ऑफ माई' लाइफ पर आधारित है।

निर्देशक- मनीष शर्मा

इस फिल्म में अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की जगह मुख्य भूमिका निभाने के लिए एक्टर शाहिद कपूर को चुना गया था, लेकिन उन्होंने शुरू होने से पहले ही फिल्म छोड़ दी थी।

निर्देशक- दिबाकर बनर्जी

सुशांत सिंह राजपूत अभिनीत इस फिल्म में अभिनेता आमिर खान को विलेन के रोल के लिए ऑफर दिया गया था, लेकिन उन्होंने इसे छोड़कर यशराज बैनर की ही फिल्म %धूम 3% को चुना। बाद में फिल्म में अभिनेता नीरज काबी ने विलेन का रोल निभाया था।

निर्देशक- नीरज पांडे

फिल्म की कास्ट साइन करने से पहले अभिनेता अक्षय कुमार, महेंद्र सिंह धोनी की भूमिका निभाने के लिए काफी रुचि दिखा रहे थे, लेकिन धोनी और उनके लुक में कम समानता के कारण फिल्म के निर्देशक नीरज पांडे ने विनम्रतापूर्वक उन्हें मना कर दिया था। इसके बाद सुशांत सिंह राजपूत के अभिनय ने किरदार को पर्दे पर हूबहू जीवंत कर दिया था।

निर्देशक- दिनेश विजन

फिल्म में सुशांत के साथ आलिया भट्ट डेब्यू करने वाली थीं पर आलिया ने आखिरी समय में करण जौहर की एक फिल्म चुनी और इस फिल्म को छोड़ दिया था।

निर्देशक- अभिषेक कपूर

सुशांत सिंह राजपूत के किरदार का नाम 'मंसूर खान' था, यह अभिनेत्री सारा अली खान की पहली फिल्म थी। संयोग ही है कि सारा अली खान के दादा जी का नाम भी मंसूर अली खान पटौदी था। वहीं फिल्म को लेकर कुछ विवाद के कारण यह उत्तराखंड राज्य में प्रतिबंधित रही।

निर्देशक- अभिषेक चौबे

सुशांत सिंह राजपूत अभिनीत इस फिल्म में मनोज बाजपेयी ने मान सिंह का किरदार निभाया था और बैंडिट क्वीन फिल्म में भी उन्होंने मान सिंह का ही रोल किया था। इसके अलावा सोनचिड़िया फिल्म के क्रू सदस्यों में वे लोग शामिल थे, जो उस क्षेत्र में कभी डाकू थे जहां फिल्म की शूटिंग हुई थी।

निर्देशक- नीतेश तिवारी

सुशांत सिंह राजपूत अभिनीत फिल्म में ताहिर राज भसीन को धूम्रपान करने वाले व्यक्ति के रूप में दिखाया गया था, जो असल जीवन में धूम्रपान नहीं करते। इस समस्या को हल करने के लिए प्रोडक्शन टीम ने तुलसी के पत्तों और ग्रीन टी के साथ सिगरेट का इस्तेमाल किया था। इसके साथ ही बताते चलें कि छिछोरे 2019 की 11वीं सबसे ज्यादा कमाई करने वाली बॉलीवुड फिल्म थी और अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म भी थी।

निर्देशक- मुकेश छाबरा

दिल बेचारा का टाइटल ट्रैक बिना किसी कट के एक ही बार में शूट किया गया था। इसे फराह खान ने कोरियोग्राफ किया था, जिन्होंने अपने काम के लिए कोई भी भुगतान लेने से इनकार कर दिया था। वहीं फिल्म के मुख्य अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत फिल्म की आधिकारिक रिलीज से करीब एक महीने पहले 14 जून 2020 को अपने अपार्टमेंट में मृत पाए गए थे।

अभिनेता को मिले ये अवॉर्ड

सुशांत सिंह राजपूत को उनके करियर में शानदार अभिनय के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया था।

क्रिकेट, क्राइम, करिश्मे पर नेटफ्लिक्स का नया दांव, ये सितारा निकला तुरुप का इक्का

अपराध आधारित सीरीज में 'राणा नायडू' का अलग ही फैन बेस रहा है। लोगों ने इसके पहले सीजन को लाख कोसा हो, इसमें मौजूद गालियों पर लंबे लंबे आलेख लिखे हों, पर शो खूब देखा गया और ओटीटी पर माल अच्छा है या बुरा, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। बस इसे खूब देखा जाना चाहिए। सबका अपना अपना दृष्टिकोण है। इन दिनों ओटीटी, वह सब कुछ दिखाने को बेकरार रहता है जो सिनेमा में सेंसर की कैंचियों के बीच से होकर गुजर नहीं पाता। नेटफ्लिक्स ने पारिवारिक मनोरंजन की तरफ इस शो को ले जाने का वायदा बार बार किया होगा, लेकिन बस दिल को बहलाने को ही ये ख्याल अच्छा है! 'राणा नायडू सीजन 2' के ट्रेलर में भी ऐसा ही कुछ वादा किया लेकिन नेटफ्लिक्स देखने वालों को इन वादों पर भी ऐतबार कम ही होता है, कुछ कुछ वैसे ही कि तेरे वादे पर जिये हम, तो ये जान झूठ जाना...!

पहले सीजन जैसे राणा नायडू के तेवर वेब सीरीज 'राणा नायडू सीजन 2' के तेवर अपने पहले सीजन जैसे ही हैं। कोई आधा दर्जन लेखक एक विदेशी सीरीज का देसी अनुकूलन करने की कोशिश इस बार भी कर रहे हैं, सीरीज का लेखन देखकर ये तो समझ आता है कि मुंबई में रहने वाले लेखकों ने दुनिया भले खूब घूम ली हो, अपना देश घूमना उन्होंने बंद कर दिया है। मूल रूप से तेलुगु में बनी सीरीज के हिंदी डब संस्करण में मामला और ढीला हो जाता है। बस, किरदारों के अहंकार तने रहते हैं। एक ऐसी काल्पनिक दुनिया में, जिसको हकीकत के करीब रखने की कोशिश मे ये सीरीज बार बार लड़खड़ाती है। सीरीज के रचयिता करण अंशुमान ने अपनी ही वेब सीरीज 'इनसाइड एज' से क्रिकेट का काला धंधा उधार लिया है और 'मिर्जापुर' से चुराया है रिश्तों में घुलते क्राइम का पल्प फिक्शन जैसा परिवार।

कृति खरबंदा का ओटीटी डेब्यू

हां, दो नई बातें भी इस बार हैं। एक तो मुंबई का गैंगस्टर रऊफ मिर्जा (अर्जुन रामपाल) जिसके लिए क्रिकेट का बैट 'एनिमल' के रणविजय की कुल्हाड़ी सरीखा है। और, दूसरी कृति खरबंदा जो इस सीरीज से अपना ओटीटी डेब्यू कर रही हैं। रऊफ उतना ही हिंसक है जितना रणविजय रहा है। कृति के सामने चुनौती रिश्तों की है। समाज में रिश्तों का कत्ल करती नई सोच का भी ये सीरीज कुछ कुछ मुजाहिरा करती चलती है। पता नहीं, एकता कपूर के सीरियल देख बहुओं के सिरों से उतरे पल्लू हालात यहां तक ले आए हैं, या वाकई समाज में अब वे सब भी उतने ही बड़े 'कलाकार' हो चुके हैं, जिनका अपना योगदान रिश्तों को बचाने और घरों को सजाने में रत्ती भर का भी नहीं है। कृति खरबंदा का रोल आलिया ओबेरॉय का है। नाम आलिया है तो पिता को फिल्म स्टूडियो का मालिक दिखा देना सबसे आसान है। राइटिंग टीम का आलस उजागर करने में ये ट्रैक भी पीछे नहीं रहता। भाई-बहन की आपस में न पटने जैसा किस्सा भी साथ में बोनस के तौर पर है।

लेखन और निर्देशन दोनों में फेल

'राणा नायडू सीजन 2' को करण अंशुमन, सुपर्ण वर्मा और अभय चोपड़ा ने मिलकर निर्देशित किया है। शायद इसीलिए सीरीज में क्रिकेट, सिनेमा के साथ ही सियासत का भी एक ट्रैक समानांतर रूप से चलता रहता है। नेता और माफिया की न संगत अब अपराध कथाओं में नई रही है और न ही दोनों की एक दूसरे से आगे निकलने की होड़। कहने को 'राणा नायडू सीजन 2' में मनोरंजन का भरपूर मसाला है, लेकिन सिर्फ मसालों से ही भोजन नहीं बनता न। स्वाद लाने के लिए जिन मूलभूत तत्वों की जरूरत होती है, वह दाल-रोटी यहां मिसिंग है। कहानी बेरतीबी से फैली हुई है। निर्देशन बिल्कुल अपेक्षित ढर्रे पर चलता है। सीरीज और दर्शक के बीच सामंजस्य पहले एपिसोड से ही इतना तगड़ा बनता है कि दर्शक जो जो सोचता जाता है, सीरीज वही सब कुछ दिखाती चलती है। लेखन और निर्देशन में औसत से भी कम रही वेब सीरीज 'राणा नायडू सीजन 2' को इसके कलाकारों ने संभालने की ही पूरी कोशिश की है।

राणा दग्गूबाती के सहारे सजी सीरीज कलाकारों में राणा दग्गूबाती का अपना आभामंडल रहा है हिंदी सिनेमा के दर्शकों के बीच।

हाउसफुल 5 की रफ्तार अब धीमी, 'हाऊ टू ट्रेन योर ड्रैगन' समेत बाकी फिल्मों का क्या हाल?

बॉक्स ऑफिस पर इन दिनों अलग-अलग जोनर की कई फिल्में रिलीज हुई हैं, जो फैंस को एंटरटेन कर रही हैं। अक्षय कुमार की फिल्म 'हाउसफुल 5' से लेकर हॉलीवुड फिल्म 'हाऊ टू ट्रेन योर ड्रैगन' तक, ऑडियंस को काफी विविधता भरा कंटेंट देखने को मिल रहा है। चलिए आपको बताते हैं आखिर कौन सी फिल्म ने कितना कलेक्शन किया है।

'हाऊ टू ट्रेन योर ड्रैगन' की ओपनिंग

फिल्म 'हाऊ टू ट्रेन योर ड्रैगन' ने अपने पहले दिन भारत में ठीक-ठाक आंकड़े के साथ ओपनिंग की है। फिल्म ने पहले ही दिन 4.88 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया है। भारत में ये फिल्म चार भाषाओं में रिलीज हुई है- इंग्लिश, हिंदी, तमिल और तेलुगु।

हालांकि पिछले दिनों रिलीज हुई टॉम क्रूज की हॉलीवुड फिल्म 'मिशन इंपॉसिबल 8' से इसकी तुलना करें तो यह कलेक्शन काफी कम है। टॉम क्रूज की फिल्म ने तो 16.5 करोड़ रुपये से शुरुआत की थी। इस तरह फिल्म 'हाऊ टू ट्रेन योर ड्रैगन' की शुरुआत धीमी ही कही जाएगी।

'हाउसफुल 5' ने धीमी पड़ी रफ्तार

अक्षय कुमार और अभिषेक बच्चन की फिल्म हाउसफुल 5 6 जून को सिनेमाघरों में रिलीज हुई है। आठवें दिन यानी अपने सेकंड फाइडे को फिल्म बिल्कुल भी खास नहीं कर पाई। फिल्म ने एक दिन का सबसे कम आंकड़ा बीते शुक्रवार को कमाया। मल्टीस्टारर इस फिल्म के हाथ सिर्फ 6 करोड़ लगे, जिसके बाद इसका कुल कलेक्शन अब 133 करोड़ के पार चला गया है।

'ठग लाइफ' का कलेक्शन कमल

हासन की फिल्म 'ठग लाइफ' साउथ के बड़े फिल्मी प्रोजेक्ट्स में से एक माना जा रहा था। लेकिन मणि रत्नम और कमल हासन की जोड़ी सालों बाद आकर भी दर्शकों को इंप्रेस करने में नाकाम रही है। फिल्म ने आठवें दिन 79 लाख का कलेक्शन किया, जो कि हिंदी, तमिल और तेलुगु भाषाओं को मिलाकर आया। इसके बाद अब फिल्म का कुल कलेक्शन 44.74 पहुंच गया है।

स्पोर्ट्स

डब्ल्यूटीसी फाइनल की मेजबानी की भारत की उम्मीदों को लगेगा झटका?

ICC-इंग्लैंड में हो सकता है यह करार

दक्षिण अफ्रीका की टीम इतिहास रचने के बिल्कुल नजदीक है। टीम ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल में अपना दबदबा बना लिया है। दक्षिण अफ्रीका की टीम जीत से महज 69 रन दूर है और उसके आठ विकेट बाकी हैं। ऐसे में इस साल टेस्ट को नया चैंपियन मिल सकता है। 2021 में न्यूजीलैंड और 2023 में ऑस्ट्रेलिया ने खिताब जीता था। हालांकि, पिछले दोनों फाइनल में भारतीय टीम फाइनल का हिस्सा रही थी। दो हार के बाद भारत ने विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल की मेजबानी करने की इच्छा जताई थी। हालांकि, भारत की उम्मीदों को झटका लगता दिख रहा है। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में यह बात सामने आई है कि आईसीसी भारत में फाइनल कराने को तैयार नहीं है। आईसीसी इंग्लैंड के साथ अगले तीन फाइनल के विंडो के लिए करार भी करने जा रहा है।

आईसीसी इंग्लैंड के समर्थन में

टेलीग्राफ यूके की एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत के पूर्व कप्तान रोहित शर्मा और पैट कमिंस के समर्थन के बावजूद डब्ल्यूटीसी फाइनल को इंग्लैंड से बाहर स्थानांतरित करने की संभावना नहीं है। रिपोर्ट के मुताबिक, अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) को अगली तीन विंडो के लिए इंग्लैंड में फाइनल की मेजबानी करने के अपने इरादे के बारे में बता दिया है। उन्होंने कहा, %भारत द्वारा इस शोपीस इवेंट की मेजबानी की इच्छा जताने के बावजूद इंग्लैंड क्रिकेट अगले तीन विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल्स की मेजबानी के लिए आईसीसी के साथ सहमत होने के करीब है।

2019 में हुई थी WTC की शुरुआत

विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) 2019 में शुरू हुई थी। इस दौरान दो साल के चक्र में टीमें आपस में टेस्ट सीरीज खेलती हैं। अंक प्रतिशत के आधार पर शीर्ष दो पर रहने वाली टीमें फाइनल में भिड़ती हैं। अब 2027 में अगला टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल खेला जाएगा। बीसीसीआई ने आईसीसी के सामने 2023 फाइनल में हार के बाद भारत में फाइनल मुकाबले आयोजित करने की इच्छा व्यक्त की थी।

अगले तीन संस्करण के फाइनल इंग्लैंड में मौजूदा आईसीसी अध्यक्ष जय शाह हैं जो बीसीसीआई में सचिव पद पर भी रह चुके हैं। जब भारत ने फाइनल की इच्छा जताई थी तो जय शाह बीसीसीआई सचिव थे। रिपोर्ट के मुताबिक, आईसीसी के हितधारकों ने इस पर चर्चा की है, लेकिन वह भारत में फाइनल कराने को सहमत नहीं दिखे। अब इंग्लैंड को अगले तीन संस्करणों (2027, 2029 और 2031) के फाइनल की मेजबानी के लिए मंजूरी मिलने की पूरी संभावना है। आईसीसी जुलाई में सिंगापुर में अपने अगले वार्षिक सम्मलेन में इसका एलान कर सकता है।

सिंगापुर में लग सकती है मुहर

रिपोर्ट में बताया गया है कि अगले महीने सिंगापुर में आईसीसी के वार्षिक सम्मेलन में इस फैसले पर मुहर लग जाएगी। वहीं, ईसीबी ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के बीच जारी फाइनल के समाप्त होने के तुरंत बाद ही 2027 के डब्ल्यूटीसी फाइनल के लिए योजना बनाना शुरू कर देगा। विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के तीन फाइनल की मेजबानी करने के बावजूद इंग्लैंड पिछले तीनों संस्करण में फाइनल में पहुंचने में नाकाम रहा है।

अल्टीमेट खो-खो का तीसरा सत्र 29 नवंबर से कई अंतरराष्ट्रीय स्टार खिलाड़ी होंगे शामिल

भारतीय खो-खो महासंघ (केकेएफआई) ने शुक्रवार को घोषणा की कि 29 नवंबर से शुरू होने वाले अल्टीमेट खो-खो (यूकेके) के तीसरे सत्र में पहली बार अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी भाग लेने के पात्र होंगे। केकेएफआई के अध्यक्ष सुधांशु मित्तल ने कहा कि आगामी सत्र के लिए नीलामी में अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों को भी शामिल किया जाएगा।

उन्होंने कहा, अल्टीमेट खो-खो के तीसरे सत्र की शुरुआत 29 नवंबर 2025 से हो रही है। हम गर्व के साथ यह घोषणा कर रहे हैं कि इसमें पहली बार अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी भी भाग लेंगे। उन्होंने कहा, यह कदम न केवल लीग की प्रतिस्पर्धा को नयी ऊंचाई देगा बल्कि भारत को खो-खो का वैश्विक केंद्र बनाने की हमारी दृष्टि को भी दर्शाता है।

इस अवसर पर केकेएफआई ने खो-खो सहित स्वदेशी खेलों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शैक्षिक और वैज्ञानिक संसाधन विकसित करने के लिए एसजीटी विश्वविद्यालय के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर भी हस्ताक्षर किए। ओडिशा जगरनॉट्स ने यूकेके का उद्घाटन सत्र जीता, जबकि गुजरात जायंट्स की टीम पिछले सत्र में चैंपियन बनी थी।

सुरुचि सिंह को स्वर्ण, महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में जीता पदक

उभरती हुई भारतीय निशानेबाज सुरुचि सिंह ने शुक्रवार को महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल फाइनल में जीत के साथ आईएसएसएफ विश्व कप की इस स्पर्धा में लगातार तीसरा स्वर्ण पदक जीता। अपने तीसरे विश्व कप में भाग ले रही इस 19 वर्षीय खिलाड़ी ने व्यक्तिगत स्वर्ण पदकों की हैट्रिक पूरी की तथा कुल मिलाकर चौथा पदक जीता।

उन्होंने इससे पहले अप्रैल में ब्यूनस आयर्स और लीमा विश्व कप में स्वर्ण जीते थे। सुरुचि ने फाइनल में 241.9 अंक के साथ स्वर्ण पदक जीता। चीन की कांस्य पदक विजेता कियानक्सुन याओ (221.7) को पछाड़ने के तुरंत बाद सुरुचि ने 10.5 अंक के साथ बढ़त हासिल कर ली, जबकि फ्रांस की रजत विजेता कैमिली जेड्रेजेवस्की (241.7) सिर्फ 9.5 अंक का ही निशाना साध पायी।

अंतिम प्रयास में 9.5 का स्कोर भारतीय खिलाड़ी के लिए शीर्ष पुरस्कार हासिल करने के लिए पर्याप्त था, क्योंकि जेड्रेजेवस्की ने 9.8 का ही स्कोर किया था। सुरुचि इससे पहले क्वालीफिकेशन में 588 अंक के साथ दूसरे स्थान पर रहीं, जबकि दो बार की ओलंपिक पदक विजेता मनु भाकर 574 अंक के साथ 25वें स्थान पर रहीं। फाइनल मुकाबले के दौरान कमेंट्री कर रहीं भाकर ने अपनी हमवतन के स्वर्ण पदक जीतने पर खुशी जाहिर की।

इजराइल-ईरान संघर्ष में भयावह मोड

खामनेई की चेतावनी के बाद दोबारा हमला, दर्जनों मरे व सैकड़ों घायल

इजराइल ने शुक्रवार को ईरान के परमाणु और सैन्य ठिकानों पर युद्धक विमानों और तस्करी करके लाए गए ड्रोनों से भीषण हमले किये ताकि प्रमुख प्रतिष्ठानों को निशाना बनाया जा सके और शीर्ष जनरलों एवं वैज्ञानिकों को मारा जा सके। इजराइल ने कहा कि इससे पहले ईरान परमाणु हथियार बना पाता यह हमला जरूरी था। इजराइल के हमले के बाद ईरान ने भी शुक्रवार को जवाबी कार्रवाई करते हुए इजराइल पर दर्जनों बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं, जिससे यरुशलम और तेल अवीव के ऊपर आसमान में विस्फोट हुए। शनिवार सुबह यरुशलम के ऊपर आसमान में सायरन और धमाकों की आवाजें फिर सुनाई दीं जो इस बात का संकेत देती हैं कि ईरान ने फिर से हमला किया है।

हमलों के बीच इजराइली सेना ने नागरिकों से सुरक्षित स्थानों में जाने का आग्रह किया है। ईरान के अर्धसैनिक बल 'रिवोल्यूशनरी गार्ड% के साथ घनिष्ठ संबंध रखने वाले ईरानी वेबसाइट 'नूर न्यूज% ने कहा कि नए हमले शुरू किए गए हैं। तेल अवीव में 'एसोसिएटेड प्रेस% के पत्रकारों ने कम से कम दो ईरानी मिसाइलों को जमीन पर गिरते देखा। ईरान

की तरफ से दूसरे दिन किए गए हमलों में घायल हुए सात लोगों का तेल अवीव के एक अस्पताल में इलाज किया गया। घायलों में एक की हालत गंभीर है। इजराइल की अग्निशमन और बचाव सेवाओं ने कहा कि प्रक्षेपास्त्र के एक इमारत से टकराने के कारण ये लोग घायल हुए। इस बीच, शनिवार आधी रात के बाद मध्य तेहरान में विस्फोटों और ईरानी हवाई रक्षा प्रणालियों द्वारा लक्ष्यों पर की गई गोलीबारी की आवाजें गूंजने लगीं।

ईरान की अर्ध-सरकारी समाचार एजेंसी 'तस्नीम% ने तेहरान के मेहराबाद अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर आग लगने की खबर दी है, साथ ही 'एक्स% पर एक वीडियो भी साझा किया जिसमें धुएं का गुबार और लपटें उठती दिखाई दे रही हैं। ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामनेई ने शुक्रवार को एक संदेश में कहा, '' हम उन्हें इस अपराध के बाद बच कर नहीं निकलने देंगे। संयुक्त राष्ट्र में ईरान के राजदूत ने कहा कि इजराइली हमलों में 398 लोग हताहत हुए हैं । इनमें 78 लोग मारे गए और 320 से अधिक घायल हुए। इजराइली स्वास्थ्य सेवाओं ने कहा कि तेल अवीव में बमबारी में 34 लोग घायल हुए हैं जिनमें एक महिला भी शामिल है। अमेरिका के एक अधिकारी ने बताया कि क्षेत्र में मौजूद अमेरिकी हवाई रक्षा प्रणाली ईरान की ओर से इजराइल पर जवाबी कार्रवाई में दागी गई मिसाइल को रोकने में मदद कर रही है। इजराइल की सेना ने कहा कि करीब 100 ठिकानों पर शुरुआती हमले में करीब 200 विमान शामिल थे। इजराइल ने जिन स्थानों पर हमला किया उनमें नतांज में ईरान का मुख्य परमाणु-संवर्धन केन्द्र शामिल है। एक खबर के अनुसार इजराइल ने तेहरान से लगभग 100 किलोमीटर (60 मील) दक्षिण-पूर्व में स्थित फोर्डो में एक अन्य परमाणु-संवर्धन केन्द्र पर भी हमला किया है।

प्यार, धोखा और कत्ल! प्रेमिका के जाल में फंसा आशिक, फिर बना शिकार...

झाड़ियों में इस हालत में मिली लाश

उत्तर प्रदेश के कुशीनगर जिले से एक सनसनीखेज मामला सामने आया है। जहां बीते 11 जून को एक युवक अनिल यादव की बेरहमी से हत्या कर उसका शव झाड़ियों में फेंक दिया गया। पुलिस ने इस हत्या की गुत्थी को महज 48 घंटे में सुलझा लिया। इस वारदात में मृतक की प्रेमिका, उसका पिता और भाई शामिल पाए गए। पुलिस ने तीनों को गिरफ्तार कर लिया है और हत्या में इस्तेमाल हथियार भी बरामद कर लिया गया है।

क्या है पूरा मामला?

मिली जानकारी के मुताबिक, यह घटना कुशीनगर जिले के सेवरही थाना क्षेत्र के मठिया भोखरिया नौका टोला की है। 11 जून को राहगीरों ने बड़ी नहर के पास झाड़ियों में एक युवक का शव देखा। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। शव की पहचान कसया थाना क्षेत्र के सखवनिया बतर डेरा निवासी 30 वर्षीय अनिल यादव के रूप में हुई। पुलिस ने जांच शुरू की

और मामला हत्या का निकला।

प्रेमिका के साथ 2 साल से था संबंध

पुलिस की जांच में पता चला कि अनिल यादव का पिछले 2 सालों से अर्चना यादव नाम की युवती से प्रेम संबंध था। अर्चना की शादी मार्च 2025 में हो चुकी थी, लेकिन अनिल उस पर शादी के बाद भी शारीरिक संबंध बनाए रखने का दबाव डाल रहा था। इससे अर्चना मानसिक रूप से परेशान हो गई थी।

पति को हो गया था शक, भेजा मायके

जब यह बात अर्चना के पति को पता चली तो उसने उसे मायके भेज दिया। मायके आने के बाद अर्चना ने अपने पिता और भाइयों के साथ मिलकर अनिल को रास्ते से हटाने की साजिश रची।

नहर के पास बुलाकर की हत्या

पुलिस के अनुसार, अर्चना ने अनिल को मठिया भोखरिया नहर के पास मिलने के लिए बुलाया। वहां पहले से घात लगाए बैठे उसके पिता और 2 भाइयों ने अनिल पर हमला कर उसकी बेरहमी से हत्या कर दी। शव को वहीं झाड़ियों में फेंक दिया गया।

अपराधी प्रवृत्ति का है परिवार

जांच में यह भी सामने आया कि अर्चना का पिता और भाई पहले से ही आपराधिक गतिविधियों में शामिल हैं। अर्चना के पिता के खिलाफ जिले के कई थानों में गंभीर मामले दर्ज हैं, जबकि भाई राहुल पर तुर्कपट्टी थाने में केस दर्ज है।

48 घंटे में गिरफ्तारी

कुशीनगर के एसपी संतोष कुमार मिश्रा के निर्देश पर पुलिस टीम ने तेजी से काम करते हुए 48 घंटे के अंदर अर्चना, उसके पिता और भाई को गिरफ्तार कर लिया। साथ ही हत्या में इस्तेमाल किए गए हथियार भी बरामद कर लिए गए हैं।

जारी है आगे की कार्रवाई

पुलिस का कहना है कि इस मामले में आगे की कार्रवाई की जा रही है। आरोपियों के खिलाफ पुख्ता सबूत जुटाए जा रहे हैं ताकि उन्हें जल्द से जल्द सजा दिलाई जा सके।

प्रशांत किशोर ने राजनीतिक पार्टियों पर लगाया बड़ा आरोप

बताया किसे मिलेगी जन सुराज की टिकट

जन सुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर ने शुक्रवार को बिहार में कुछ पार्टियों पर लोकसभा और विधानसभा चुनावों में टिकट बेचने का आरोप लगाते हुए कहा कि उनकी पार्टी सिर्फ उन्हीं को टिकट देगी, जिन्हें अपने क्षेत्र में चुनाव लड़ने के इच्छुक लोगों में सर्वाधिक समर्थन हासिल होगा।

जन सुराज टिकट केवल उन्हीं को देगी जो इसके हकदार

किशोर ने गया जिले में अपनी 'बदलाव यात्रा के दौरान कहा कि कुछ पार्टियों में लोकसभा और विधानसभा चुनावों के दौरान करोड़ों रुपए में टिकट बेचने की परंपरा रही है, जो स्वस्थ लोकतंत्र के लिए हानिकारक है।

उनकी पार्टी इस तरह की प्रचलित प्रथा को खारिज करती है। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी टिकट केवल उन्हीं को देगी जो इसके हकदार हैं। जन सुराज नेता ने कहा, जन सुराज में कोई नेता या समिति इस वर्ष होने वाले विधानसभा चुनावों के लिए उम्मीदवार तय नहीं करेगी

बल्कि केवल उन्हीं उम्मीदवारों को टिकट मिलेगा, जिन्हें निर्वाचन क्षेत्र में लोगों का अधिकतम समर्थन प्राप्त होगा। उन्होंने कहा कि टिकट पाने के इच्छुक प्रत्याशी अपनी पसंद के निर्वाचन क्षेत्रों में प्रचार शुरू कर चुके हैं।

जन सुराज का एक ही उद्देश्य...बिहार जीतना चाहिए

किशोर ने कहा कि स्वच्छ छवि के लोगों को टिकट देने का हर संभव प्रयास किया जाएगा, फिर भी यदि किसी गलत व्यक्ति को टिकट मिल भी जाए तो वह जनता से अपील करेंगे कि उसे वोट मत दीजिए।

उन्होंने कहा कि जन सुराज का साफ मानना है कि सभी 243 सीटों पर स्वच्छ छवि के लोगों को चुनाव जीतना चाहिए, चाहे वे किसी भी पार्टी के हों। जन सुराज का एक ही उद्देश्य है कि बिहार जीतना चाहिए।

अहमदाबाद हादसे की जांच के लिए उच्च स्तरीय समिति बनी, 3 महीने में रिपोर्ट सौंपेगी

नेशनल डेस्क. अहमदाबाद में हाल ही में हुए भयानक विमान हादसे ने पूरे देश को गहरा सदमा दिया है। एयर इंडिया की फ्लाइट एआई-171 लंदन के लिए उड़ान भरने के बाद मात्र पांच मिनट में क्रैश हो गई, जिसमें 241 यात्रियों की जान चली गई। इस त्रासदी ने न सिर्फ यात्रियों के परिवारों को तोड़ा बल्कि पूरे क्षेत्र में भी भारी नुकसान पहुंचाया। इस गंभीर हादसे की वजहों का पता लगाने के लिए सिविल एविएशन मंत्रालय ने एक उच्च स्तरीय, बहु-विषयक जांच समिति गठित की है। इस समिति की जिम्मेदारी होगी हादसे के कारणों की जांच करना, मौजूदा मानकों का आकलन करना, और भविष्य में ऐसी दुर्घटनाओं को रोकने के लिए व्यापक सुरक्षा दिशा-निर्देश सुझाना। इस जांच समिति की अध्यक्षता केंद्रीय गृह सचिव करेंगे। इसमें नागरिक उड्डयन

मंत्रालय, गुजरात सरकार, पुलिस, भारतीय वायु सेना, नागरिक उड्डयन सुरक्षा ब्यूरो, फोरेंसिक विज्ञान निदेशालय समेत कई विशेषज्ञ सदस्य शामिल होंगे। साथ ही आवश्यकता अनुसार विमानन विशेषज्ञ, दुर्घटना जांचकर्ता और कानूनी सलाहकार भी समिति में जुड़ सकते हैं। समिति साइट का निरीक्षण करेगी और चालक दल, एयर ट्रैफिक कंट्रोलर तथा अन्य संबंधित कर्मियों के इंटरव्यू लेकर घटना के हर पहलू को समझेगी। यदि आवश्यकता पड़ी तो विमान निर्माता कंपनियों और विदेशी एजेंसियों के साथ भी सहयोग किया जाएगा ताकि जांच निष्पक्ष और व्यापक हो। जांच समिति को तीन महीने का समय दिया गया है, जिसके अंदर वह अपनी पूरी रिपोर्ट सरकार को सौंपेगी। रिपोर्ट में दुर्घटना के कारण, सुरक्षा में खामियों, और भविष्य के लिए सुधारात्मक सुझाव शामिल होंगे। यह दुर्घटना इतनी भयंकर थी कि लैंडिंग के बाद विमान बीजे मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल से टकरा गया, जहां 65 छात्र भी मारे गए।

इस हादसे ने न सिर्फ यात्रियों की जान ली बल्कि हॉस्टल में रहने वाले छात्रों और उनके परिवारों के लिए भी अपूरणीय क्षति पहुंचाई।

व्यापार

एअर इंडिया की आक्रामक विस्तार योजना के लिए चुनौतियां बरकरार

अहमदाबाद हादसे से उठ रहे कई सवाल

एअर इंडिया को लेकर अक्सर यात्री गंदी सीटें, टूटे हुए आर्मरेस्ट, खराब मनोरंजन प्रणाली और गंदे केबिन की तस्वीरें साझा करते हैं। वहीं, अब इस हादसे ने विश्वसनीयता पर और भी बड़े प्रश्नचिन्ह खड़े कर दिए हैं। ऐसे में अब एअर इंडिया को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए नए विमान खरीदने होंगे और बेहतर रखरखाव करना होगा। उन्हें उचित रखरखाव पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि एअर इंडिया का अतीत उतार-चढ़ाव भरा रहा है।

एअर इंडिया ने हाल के वर्षों में अपने अंतरराष्ट्रीय उड़ान नेटवर्क का आक्रामक रूप से विस्तार किया है, लेकिन इसके साथ ही यात्रियों की शिकायतें भी लगातार सामने आ रही हैं। सोशल मीडिया पर यात्री अक्सर गंदी सीटें, टूटे हुए आर्मरेस्ट, खराब मनोरंजन प्रणाली और गंदे केबिन की तस्वीरें साझा करते हैं। ऐसे में अहमदाबाद में दुर्घटनाग्रस्त बोइंग 787 ड्रीमलाइनर ने और सवाल खड़े किए हैं।

एअर इंडिया के सीईओ विल्सन ने कहा, यह हम सभी के लिए एक कठिन दिन है। उन्होंने यह भी बताया कि जांच में समय लगेगा। 2013 में बैटरी की समस्या के कारण एअर इंडिया को ड्रीमलाइनर से जुड़ी समस्या का सामना करना पड़ा था। बैटरी की समस्या के कारण तत्कालीन सरकारी स्वामित्व वाली एअर इंडिया को भी अपने ड्रीमलाइनर बेड़े को कुछ समय के लिए रोकना पड़ा था। उस समय, एयरलाइन के पास ऐसे लगभग छह विमान थे। इसके अलावा, एयरलाइन को इन समस्याओं के लिए बोइंग से मुआवज़ा भी मिला था। भारत के विमान दुर्घटना जांच ब्यूरो के पूर्व कानूनी विशेषज्ञ विभूति देवड़ा ने कहा, एअर इंडिया को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए नए विमान खरीदने होंगे और बेहतर रखरखाव करना होगा। उन्हें उचित रखरखाव पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि एअर इंडिया का अतीत उतार-चढ़ाव भरा रहा है। सरकारी स्वामित्व के दौरान, 2010 में दुबई से एक बोइंग 737 विमान घरेलू हवाई अड्डे पर रनवे से आगे निकल गया और खाई में दुर्घटनाग्रस्त हुआ था। इसमें 158 लोग मारे गए। 2020 में, इसकी कम लागत वाली इकाई एअर इंडिया एक्सप्रेस का एक विमान भारत में एक रनवे से फिसल गया, जिसमें 21 लोग मारे गए।

ब्रिटेन में पहले से ही उड़ान देरी के लिए एअर इंडिया को सबसे खराब एयरलाइन का दर्जा मिला है। मई में पीए न्यूज एजेंसी की ओर से नागर विमानन प्राधिकरण के डाटा के अनुसार, 2024 में इसकी उड़ानें औसतन लगभग 46 मिनट देरी से रवाना हुईं। वित्तीय मोर्चे पर भी एअर इंडिया को नुकसान का सामना करना पड़ रहा है। कम से कम वित्तीय वर्ष 2019-20 से यह घाटे में है। 2023-24 में, एअर इंडिया ने 4.6 अरब डॉलर की बिक्री पर 520 मिलियन डॉलर का शुद्ध घाटा दर्ज किया।

लंबी दूरी की उड़ानों के लिए सबसे बेहतर विकल्प माने जाने वाले बोइंग के ड्रीमलाइनर ने 14 साल पहले आसमान में उड़ान भरी थी और अब, 1,100 से अधिक ऐसे विमान सेवा में हैं। बृहस्पतिवार को एअर इंडिया का विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमें विमान में सवार 241 लोगों की जान चली गई। यह भी पहली बार था कि सबसे अधिक बिकने वाले वाइड-बॉडी ड्रीमलाइनर या बोइंग 787 को घातक दुर्घटना का सामना करना पड़ा। एविएशन एनालिटिक्स फर्म सिरियम के अनुसार, दुर्घटना में शामिल बोइंग 787-8 विमान-वीटी-एएनबी-11.5 साल पुराना था और 41,000 घंटे से अधिक समय तक उड़ान भर चुका था। वैश्विक स्तर पर 1,148 बोइंग 787 विमान सेवा में हैं, जिनकी औसत आयु 7.5 वर्ष है। वर्तमान में, भारत में सिर्फ एअर इंडिया और इंडिगो ही बी787 विमानों का संचालन करती हैं। एअर इंडिया के बेड़े में 34 बी787 में से 27 बी787-8एस पुराने विमान हैं।

हादसे में मारे गए व घायल हुए मेडिकल छात्रों की करें मदद, आईएमए की टाटा संस से अपील

आईएमए की गुजरात शाखा ने टाटा संस के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन को पत्र लिखकर दुर्घटना में जान गंवाने वाले यात्रियों के परिवारों को एक करोड़ रुपये का मुआवजा देने और बीजेएमसी कॉलेज छात्रावास के जीर्णोद्धार में मदद के लिए एअर इंडिया का आभार जताया। संस्था ने टाटा संस से हादसे में मारे गए छात्रों के परिजनों और घायल छात्रों को भी मदद देने की अपील की है।

इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की गुजरात शाखा ने टाटा संस के चेयरमैन को पत्र लिखकर अहमदाबाद के बीजे मेडिकल कॉलेज में घायल और मृत मेडिकल छात्रों के लिए सहायता का अनुरोध किया है। पत्र में लिखा है, हम आपसे विनम्रतापूर्वक अनुरोध करते हैं कि दुर्घटना स्थल पर मौजूद मेडिकल छात्रों को वित्तीय सहायता और आवश्यक सहायता प्रदान करने पर विचार करें, जो इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना में घायल हो गए या जिन्होंने अपनी जान गंवा दी। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की गुजरात शाखा ने टाटा संस के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन को पत्र लिखकर दुर्घटना में जान गंवाने वाले यात्रियों के परिवारों को एक करोड़ रुपये का मुआवजा देने और बीजेएमसी

कॉलेज छात्रावास के जीर्णोद्धार के लिए मदद देने की घोषणा के लिए एअर इंडिया का आभार जताया। उन्होंने कहा, हम आपसे विनम्रतापूर्वक अनुरोध करते हैं कि दुर्घटना स्थल पर मौजूद उन मेडिकल छात्रों को वित्तीय सहायता और आवश्यक सहायता प्रदान करने पर भी विचार करें, जो इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना में घायल हुए या अपनी जान गंवा चुके हैं। ये लोग न केवल पीड़ित थे, बल्कि हमारी स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के भविष्य के स्तंभ भी थे, और उनकी भलाई और परिवार समान देखभाल और सहायता के हकदार हैं। आईएमए ने टाटा संस से विनम्रतापूर्वक अनुरोध करते हुए घायल हुए या जान गंवाने वाले मेडिकल छात्रों के लिए तुरंत समान सहायता घोषित करने की अपील की। आईएमए ने कहा, हमें पूरी उम्मीद है कि आप इस अनुरोध पर करुणा और तत्परता से विचार करेंगे। आईएमए गुजरात के अध्यक्ष डॉ मेहुल जे शाह, सचिव डॉ गार्गी एम पटेल और कोषाध्यक्ष डॉ. तुषार पटेल के हस्ताक्षर के साथ यह चिट्ठी टाटा संस के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन को भेजी गई है। गुरुवार को अहमदाबाद एयरपोर्ट के पास एयर इंडिया का एक विमान दर्दनाक हादसे का शिकार हो गया। यह विमान टेकऑफ के कुछ ही सेकंड के बाद हवाई अड्डे से सटे बीजे मेडिकल कॉलेज के मेस के ऊपर गिर गया।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती ज्योती मिश्रा द्वारा कॉम्पेक प्रिंटर्स प्रा. लि. फ्री प्रेस हाउस 3/54, प्रेस कॉम्पलेक्स, ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 45ए गुप्ता चैम्बर पहली मंजिल जावरा कंपाउंड इंदौर, (म.प्र.) से प्रकाशित।
प्रधान सम्पादक : अशीष मिश्रा आर.एन.आई. पंजीयन क्रमांक : एमपी/एच/आइएन 2009/34385 फोन नं : 0731-4202569 फैक्स नं : 0731-4202569